टी.एफ.आर.आई. द्वारा गाजर घास जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन

उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान,जबलपुर के सौजन्य से खरपतवार अनुसंधान निदेशालय, जबलपुर द्वारा उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान,जबलपुर के सभागार में गाजरघास जागरूकता सप्ताह के अंतर्गत कार्यक्रम का आयोजन किया गया । इस कार्यक्रम में उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर के अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने बड़ी संख्या मेंभाग लिया ।

डॉ. पी.के. सिंह, निदेशक, खरपतवार अनुसंधान निदेशालय ने गाजरघास के दुष्प्रभावों को बताते हुये उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान की भागीदारी का आह्वान करते हुए टी.एफ.आर.आई. को गाजरघास से मुक्त बनाने का आह्वान किया । डॉ. सिंह ने कहा कि अगर हमें अपने खेत की उत्पादकता बढ़ानी है और हमें अपने एवं परिवार के स्वास्थ्य की रक्षा करना है तो गाजरघास से छुटकारा पाना जरूरी है । दिनांक16 से 22 अगस्त 2018 के दौरान पूरे देश में कृषि विश्वविद्यालयों, कृषि विज्ञान केन्द्रों, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के अनेकों संस्थानों, राज्य एवं केंद्रीय शासन के विभिन्नविभागों एवं स्कूलों आदि के माध्यम से यह कार्यक्रम पूरे देश में चलाया जा रहा है । उन्होंने लोगों से समय रहते हुयेगाजरघासकोअपने-अपनेपरिसर / संस्थानों से नष्ट करने की अपील की ।

निदेशालय की तरफ से डॉ. सिंह, द्वारा निदेशक, टी0एफ0आर0आई को गाजरघास को खानेवाले मैक्सिकन बीटल के बॉक्सों को उपहार स्वरूप भेंट किया गया तथा टी.एफ.आर.आई. परिसर व आसपास इन कीटो कोछोडा भी गया साथ ही साथ गाजरघास उन्मूलन की अन्य विधियों का भी प्रर्दशन कर जानकारी प्रदान दी गई ।

डॉ. जी. राजेश्वर राव, निदेशक, टी.एफ.आर.आई., जबलपुर ने निदेशक, खरपतवार का आभार व्यक्त करते हुये आश्वासन दिया कि वे उष्ण कटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान परिसर और उनकी आवासीय कॉलोनियों में गाजरघास की रोकथाम निदेशालय द्वारा बताई गई विधियों को अपना कर गाजरघास को समूल नष्ट करेंगे तथा संस्थान को अतिशीघ्र गाजरघास मुक्त किया जायेगा।

कार्यक्रम के संयोजक डॉ. सुशील कुमार ने पॉवरप्वाइंट प्रजेन्टेशन के माध्यम से सभागार में उपस्थित अधिकारियों-कर्मचारियों को गाजरघास से होनेवाले प्रभाव और उसके प्रबंधन की विभिन्न विधियों से परिचित कराया।

इस कार्यक्रम में निदेशलय के डॉ बसंत मिश्रा, मुकेश मीणा एवं उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान,जबलपुर की तरफ से सी. बेहरा, कार्यालय प्रमुख, डॉ.पी. वी. मेश्राम, समुह समन्वयक अनुसंधान ने कार्यक्रम में सहयोग किया।